बाल डॉक्टर-स्वच्छता के राजदूत

क्या आप एक नौ वर्ष के डॉक्टर पर भरोसा करेंगी? भारत के बाल डॉक्टर कार्यक्रम के तहत प्राथमिक स्कूल के दर्जनों बच्चे स्वच्छता को प्रोत्साहन देने के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में कार्यरत *संकल्प सांस्कृतिक समिति* ने स्कूल व समुदाय में स्वच्छता को प्रोत्साहित करने के लिए एक नवीन कार्यक्रम विकसित किया है। यह कार्यक्रम आठ गांवों के बारह स्कूलों में चलाया जा रहा है और इसमें स्कूली विद्यार्थी बेहतर स्वच्छता और स्वास्थ्य प्रोत्साहन में अगुवाई कर रहे हैं।

हर स्कूल से एक छात्रा/छात्र को बाल डॉक्टर कार्यक्रम के लिए चुना जाता है। इस बाल डॉक्टर के हर विद्यार्थी से मिलकर सुनिश्चित करते है कि वे मूल स्वच्छता नियमों का अनुसरण कर रहे हैं। इन नियमों में नाखून काटना, हाथ धोना, नहाना, बाल बनाना, साफ़ कपड़े पहनना, स्कूल के मैदान को कचरा मुक्त रखना, शौचालय निर्माण व उपयोग के लिए माता-पिता को मनाना तथा बर्तनों की धुलाई-पोंछाई जैसी बातें शामिल है।

ये बाल डॉक्टर हर विद्यार्थी से एक रुपया शुल्क लेकर अपनी 'मेडिकल किट' के लिए साबुन, डेटाल आदि वस्तुएं खरीदते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो 'बाल डॉक्टर' स्वच्छता राजदूत की भूमिका अदा करते हैं और दूसरे विद्यार्थियों को घर व स्कूल साफ़ रखने और शौचालय इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस कार्यक्रम के लिए 'बाल डॉक्टर' का चुनाव माह में दो-तीन बार किया जाता है जिससे हर बच्चे को इसमें शामिल किया जा सके। बाल डॉक्टर चुने जाने के उत्साह में सभी विद्यार्थी व उनके परिवार नियमित रूप से स्वच्छता नियमों का पालन करते हैं।

इन बच्चों के प्रयासों से स्वच्छता से जुड़े संदेश न सिर्फ़ साथी विद्यार्थियों के बीच बल्कि उनके अभिभावकों व परिवारों तक भी पहुंचते है और इस तरह पूरे समुदाय में इनका प्रभाव होता है। इसके अतिरिक्त एक अंतर स्कूली प्रतियोगिता के माध्यम से सबसे प्रभावशाली बाल डॉक्टर का भी चयन किया जाता है जिससे इस मुद्दे पर व्यापक तौर पर समझ बनाई जा सके।

साभारः वाटर एड इंडिया